DOI: 10.51220/hjssh.v9i1.13

Himalayan J. Soc.Sci. & Humanities Vol- 9 pp.77 - 80, December, 2014, ISSN. 0975 - 9891

गढ़वाल हिमालय का महान क्रान्तिकारी : भवानी सिंह रावत

सुरेश चन्दोला

इतिहास विभाग

हे0न0ब0 गढ़वाल (केन्द्रीय) विश्वविद्यालय परिसर–पौड़ी गढ़वाल

Received: 06-06-2014 **Revised: 29-10-2014** **Accepted: 18-12-2014**

ABSTRACT

प्रस्तुत आलेख में गढ़वाल हिमालय के क्रान्तिकारी भवानी सिंह रावत के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाश डालने का प्रयास किया गया है। किस तरह एवं किन परिस्थितियों में गढ़वाल हिमालय का यह नवयुवक क्रान्तिकारी बना? किन क्रान्तिकारी संगठनों से इसका सम्पर्क रहा एवं किन क्रान्तिकारियों के साथ इसने कार्य किया? साथ ही इस आलेख में हमने देश के महान क्रान्तिकारी चन्द्रशेखर आज़ाद के गढ़वाल आगमन का भी उल्लेख किया है। भवानी सिंह रावत के प्रयासों से वह गढ़वाल आये एवं यहाँ के सघन वनों में उनके द्वारा अनेक क्रान्तिकारियों को शस्त्र प्रशिक्षण दिया गया। देश के क्रान्तिकारी आन्दोलनों में भवानी सिंह रावत की क्या भूमिका रही? ब्रिटिश सरकार द्वारा उन्हें क्या यातनायें दी गयीं? इसका विवरण प्रस्तुत आलेख में देने का प्रयास किया गया है। विश्व के जितने भी गुलाम देश हुए, उनके स्वतन्त्रता संग्राम में क्रान्तिकारी आन्दोलनों का एक विशिष्ट स्थान रहा है। क्रान्तिकारी घटनाओं से सदैव ही शोषक–शासक वर्ग में आतंक उत्पन्न हुआ तथा उसके अत्याचारों से पीड़ित जनता में चेतना का संचार हुआ।

KEY WORDS-क्रान्तिकारी, भवानी सिंह रावत

गढ़वाल हिमालय के जिन क्रान्तिकारियों ने देश में स्थापित क्रान्तिकारी संगठनों में भाग लिया, उनमें क्रान्तिकारी भवानी सिंह रावत का नाम अग्रिम पंक्ति में लिखा हुआ मिलता है। भवानी सिंह रावत का जन्म 8 अक्टूबर 1910 को ग्राम पंचूर, पट्टी मवालस्यूं, परगना चौंदकोट, जिला पौड़ी गढ़वाल में हुआ था।[1] इनके पिता नाथो सिंह ब्रिटिश सेना में कप्तान के पद पर कार्यरत थे। अत: भवानी सिंह की प्रारम्भिक शिक्षा लैन्सडौन गढ़वाल में सम्पन्न हुई।

प्रथम विश्वयुद्ध में गढ़वाल राइफल्स की ओर से सराहनीय कार्य करने के पुरस्कार स्वरूप सेना से अवकाश ग्रहण करने के पश्चात नाथो सिंह को ब्रिटिश सरकार द्वारा दुगड्डा से तीन किलोमीटर दूर नौड़ी जंगल की बीस एकड़ भूमि जागीर के रूप में प्रदान कर दी गई। कुछ ही समय में नाथो सिंह ने जंगल को गांव के रूप में आबाद कर दिया। तत्पश्चात् यह गांव नाथो सिंह के नाम पर ही नाथोपुर के नाम से प्रसिद्ध हो गया।

लैन्सडौन में शिक्षा प्राप्त करते समय इनके साथ ब्रिटिश सेना के अंग्रेज अधिकारियों के बच्चे भी शिक्षा ग्रहण करते थे। वह हिन्दुस्तानियों को नफरत की नजरों से देखा करते थे तथा बात–बात पर इनके लिए गुलाम शब्द का प्रयोग करते थे। स्वयं भवानी सिंह रावत के शब्दों में–

''लैन्सडौन सदर बाजार में यदि किसी व्यक्ति को सफेद टोपी पहने अंग्रेज अधिकारी ने देख लिया, तो तुरन्त उस व्यक्ति को बुलाकर अपनी छड़ी से उसकी टोपी को जमीन पर गिरा देते थे। तत्पश्चात उस टोपी को अपने बूट से रौंद कर कुत्ते से फड़वा दिया करते थे। अंग्रेजों को गांधी टोपी से भारी चिढ़ थी।''[2]

©SHARAD

उस समय गढ़वाल में शिक्षा का प्रचार नगण्य सा था। इसीलिये अधिकांश शिक्षित व्यक्ति अपने बच्चों को शिक्षार्जन के लिए मैदानी क्षेत्रों में भेजते थे। नाथो सिंह ने भी अपने पुत्र भवानी सिंह को अध्ययन हेतु चंदोसी भेजा। यहां इन पर आर्य समाज का काफी प्रभाव पड़ा। हाईस्कूल की परीक्षा उत्तीर्ण करने के पश्चात् इन्होंने हिन्दू कालेज, दिल्ली में प्रवेश ले लिया। दिल्ली में शिक्षा ग्रहण करते समय इन्हें प्रतिदिन देश के शीर्षस्थ नेताओं के भाषण सुनने को मिलते थे। कालेज में एक दिन पं0 जवाहर लाल नेहरू ने राष्ट्रीय भावनाओं से ओत-प्रोत व्याख्यान दिया। नेहरू जी के व्याख्यान को सुनकर भवानी सिंह रावत के हृदय में भी राष्ट्र प्रेम की ज्योत प्रज्वलित हो गयी।[3] प्रारम्भ से ही ये क्रान्तिकारी विचारों के पोषक थे। यही कारण था कि इनका सम्पर्क ''हिन्दुस्तान समाजवादी प्रजातन्त्र संघ'' नामक क्रान्तिकारी संगठन से हुआ। इस संगठन के द्वारा भवानी सिंह रावत को अध्ययन हेतु क्रान्तिकारी साहित्य प्रदान किया गया ताकि वे भविष्य में उन्हें पूर्ण सहयोग प्रदान कर सके। इनकी क्रान्तिकारी विचारधारा से प्रभावित होकर ही क्रान्तिकारियों ने इन्हें ''हिन्दुस्तान समाजवादी प्रजातन्त्र संघ' की सदस्यता प्रदान की।[4]

हिन्दू कालेज का छात्रावास काश्मीरी गेट पर स्थित था। भवानी सिंह रावत इस छात्रावास में अन्य छात्रों के साथ रहते थे। छात्रावास अधीक्षक के पद पर नियुक्त थे-प्रो0 नन्दकिशोर निगम, जो गोपनीय रूप से स्वयं क्रान्तिकारी थे। प्रो0 निगम के ही सहयोग से हिन्दू कालेज का छात्रावास क्रान्तिकारियों की शरण स्थली बना हुआ था। 'हिन्दुस्तान समाजवादी प्रजातन्त्र संघ' के प्रधान सेनापति थे चन्द्रशेखर आजाद। भवानी सिंह रावत प्रथम बार आजाद से कानपुर में मिले। वह उस समय काकोरी काण्ड के पश्चात भूमिगत जीवन व्यतीत कर रहे थे।

सन् 1928 में भवानी सिंह रावत कुछ दिनों के लिए अपने घर आये, दुर्भाग्यवश इन्हीं दिनों इनके एक क्रान्तिकारी साथी जसदेव कपूर बम निर्माण के सम्बन्ध में ब्रिटिश सरकार द्वारा गिरफ्तार कर लिये गये। तलाशी के दौरान जसदेव कपूर की जेब से एक पत्र बरामद हुआ, जिसमें भवानी सिंह रावत को घर से वापस बुलाने की योजना थी। पत्र प्राप्त होने के तुरन्त बाद ब्रिटिश पुलिस ने भवानी सिंह रावत के बारे में जानकारी प्राप्त करनी प्रारम्भ कर दी। लेकिन एक सैन्य अधिकारी का पुत्र होने के कारण पुलिस ने इन्हें गिरफ्तार करना उचित नहीं समझा।[5]

दिल्ली व्यवस्थापिका में बम फेंकने की योजना बनाने के लिए सन् 1923 में क्रान्तिकारियों की एक गुप्त बैठक दिल्ली में हुई। इस समय चन्द्रशेखर आजाद कानपुर में थे। आजाद को कानपुर से दिल्ली बुलाने के लिए भवानी सिंह रावत ने पत्र वाहक का कार्य किया था। व्यवस्थापिका में बम फेंकने के पश्चात् व्यापक धर पकड़ से क्रान्तिकारियों की आर्थिक स्थिति बहुत सोचनीय हो गयी। क्रान्तिकारियों को स्वाधीनता के लिए सशस्त्र क्रान्ति की तीव्र आवश्यकता महसूस हुई। अपने इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए क्रान्तिकारियों द्वारा बम बनाने की एक फैक्ट्री खोलने का निर्णय लिया गया। इस कार्य के सम्पादन हेतु धन की आवश्यकता थी। अतः क्रान्तिकारियों द्वारा 2 जुलाई 1930 को उत्तर पश्चिम रेलवे के इंपीरियल बैंक में जमा होने वाले एक लाख रुपये को लूटने की योजना बनायी गई। परन्तु इसी दिन ब्रिटिश सरकार द्वारा पं0 मोतीलाल नेहरू की गिरफ्तारी के विरोध में सम्पूर्ण देश में जन आन्दोलन हो जाने के कारण लूट का कार्य सम्पन्न नहीं किया जा सका। तब इसी दिन रात्रि में चांदनी चौक स्थित गाडोदिया स्टोर पर डकैती डाली गयी। इस डकैती में चन्द्रशेखर आजाद, धवंतरी, लेखराज, काशीराम, विद्याभूषण, विशम्बर, यशपाल जैसे क्रान्तिकारियों के साथ भवानी सिंह रावत भी सम्मिलित थे।[6]

इस काण्ड के पश्चात पुलिस सक्रियता के चलते चन्द्रशेखर आजाद कुछ समय के लिए गुप्त प्रवास एवं अपने

युवा साथियों को शस्त्र प्रशिक्षण देने के उद्देश्य से एकान्त स्थान की तलाश में थे। आजाद की इस समस्या का समाधान किया भवानी सिंह रावत ने। जुलाई, 1930 के द्वितीय सप्ताह यशपाल, हरिकेण सिंह, हजारी लाल, विशम्बर दयाल, विद्याभूषण एवं आजाद को साथ लेकर भवानी सिंह, दिल्ली से दुगड्डा तत्पश्चात् नाथोपुर पहुंचे। पिताजी के पूछने पर भवानी सिंह ने सबका परिचय सहपाठी एवं आजाद का परिचय शिकार के शौकीन वनाधिकारी के रूप में कराया[7]।

चन्द्रशेखर आजाद और उनके साथियों ने आसपास के सघन वन में जमकर शस्त्र प्रशिक्षण एवं निशानेबाजी का अभ्यास किया। जंगल में गोलियों की आवाज से ब्रिटिश पुलिस कब तक बेखबर रहती। नाथोपुर के शांत वनों में गोलियों की ताबड़-तोड़ आवाज सुनकर उस वन क्षेत्र का वनाधिकारी वहां आ गया। वह भवानी सिंह रावत का पूर्व परिचित था। भवानी सिंह रावत उसे गुमराह करने मे सफल रहे। भवानी सिंह के तर्क-कुतर्कों से सन्तुष्ट होकर वह वापस चला गया। क्रान्तिकारियों पर अचानक आयी यह मुसीबत सहज ही टल गयी। आजाद को कार्य समाप्त कर जाना था। अत: अपने साथियों को निशानेबाजी में एवं शस्त्र प्रशिक्षण में पारंगत कर वह जब वापस कानपुर जाने लगे तो जाते समय अपनी गढ़वाल यात्रा की निशानी एवं भवानी सिंह रावत के आग्रह पर उन्होने सड़क के किनारे एक 'कुकाट' के वृक्ष पर लगातार अपनी पिस्तौल से 6 गोलियों दागी थीं[8]। जो कुछ समय पूर्व तक उस वृक्ष के क्षतिग्रस्त होने तक उसीमें सुरक्षित बतायी जाती थी। हमने दुगड्डा के स्थानीय प्रशासन से क्षतिग्रस्त वृक्ष को चीर कर आजाद की गोलियों की सत्यता को जानने का आग्रह किया, परन्तु स्थानीय प्रशासन ने इस दिशा में हमारी कोई सहायता नहीं की एवं स्थानीय निवासियों की भवानी सिंह रावत से जुड़ी भावनायें आहत न हों इसलिये हमने भी वृक्ष से छेड़छाड़ करना उचित नहीं समझा। यदि भारत के महान क्रान्तिकारी चन्द्रशेखर आजाद के पिस्तौल की गोलियां आज भी क्षतिग्रस्त 'कुकाट' के वृक्ष में कैद हैं तो उत्तराखण्ड सरकार को उन गोलियों को वहां से निकालकर प्रदेश के अभिलेखागार में रखवा देनी चाहिए, ऐसा हमारा मानना है।

दिल्ली में ब्रिटिश सरकार ने इन क्रान्तिकारियों के एक साथी कैलाशपति को गिरफ्तार कर लिया। वह ब्रिटिश सरकार द्वारा दी गयी कठोर यातनाओं को बर्दाश्त नहीं कर पाये और उन्होंने अपने सभी साथियों के नाम ब्रिटिश पुलिस को बता दिये। इनमें एक नाम भवानी सिंह रावत का भी था। तुरन्त इनकी गिरफ्तारी का वारन्ट निकला। ब्रिटिश पुलिस का एक दल इनकी तलाश में इनके पैत्रिक गांव पंचूर पहुंचा लेकिन भवानी सिंह रावत को इसकी सूचना पूर्व में ही प्राप्त हो गयी थी। अत: वह गांव से फरार हो गये। पुलिस के हाथ लगा इनका मात्र एक फोटो। फोटो की कई प्रतियां तैयार की गई जिन्हें देश के प्रमुख स्टेशनों, बन्दरगाहों तथा पुलिस थानों में चिपका दिया गया। इस घोषणा के साथ कि पकड़वाने या पता बतलाने वाले व्यक्ति को पांच सौ रुपये का नगद इनाम दिया जायेगा। इन्हें जब इस घटना की जानकारी मिली, तो ये भूमिगत हो गये।[9]

27 फरवरी, 1931 को एल्फ्रेड पार्क इलाहाबाद में पुलिस का मुकाबला करते हुए चन्द्रशेखर आजाद देश के लिए शहीद हो गये। आजाद के शहीद होने पर देश के क्रान्तिकारियों में निराशा व्याप्त हो गयी। भवानी सिंह रावत ने अपने क्रान्तिकारी साथियों से रूस जाने की इच्छा प्रकट की परन्तु इन्हें मात्र मुम्बई जाने की अनुमति प्राप्त हुई। मुम्बई में ये कामरेड रनदेव के साथ रहने लगे। तत्पश्चात् ये मुसलमान के वेश में उर्दू पत्रिका के विख्यात सम्पादक मुहम्मद ईस्माइल के घर पर रहने लगे।[10]

दिल्ली षडयन्त्र काण्ड के अभियुक्तों में भवानी सिंह रावत सबसे अन्त में गिरफ्तार हुये। इनको कारागार में

अनेक यातनायें दी गयीं तथा ट्रिब्यूनल के समक्ष इनका मुकदमा चला लेकिन ये तनिक भी विचलित नहीं हुए। पक्के साक्ष्यों के अभाव में ट्रिब्यूनल को भंग कर दिया गया साथ ही रिहा कर दिये गये भवानी सिंह रावत। तत्पश्चात ये अपने गांव नाथोपुर आ गये।[11] ब्रिटिश पुलिस के गुप्तचर गांव में भवानी सिंह रावत की गतिविधियों पर सदैव नजर बनाये रखते थे। इनकी क्रान्तिकारी गतिविधियों का ही परिणाम था कि ब्रिटिश सरकार ने इनके वृद्ध पिता की पेंशन बन्द कर दी।[12] देश की स्वतन्त्रता के लिए अपना सर्वस्व न्योछावर करने वालों के लिए ब्रिटिश सरकार द्वारा दी गई यह सजा बहुत कम थी।

देश की स्वतन्त्रता के पश्चात् भवानी सिंह रावत ने 14 वर्षों तक ग्राम पंचायत निरीक्षक का पद संभाला, परन्तु सरकार की नीतियों से असन्तुष्ट होकर इन्होंने अपने पद से त्याग-पत्र दे दिया। सन् 1967-68 में इन्होंने पौड़ी गढ़वाल विधानसभा क्षेत्र से कम्यूनिष्ट पार्टी के टिकट पर चुनाव लड़ा। किन्तु असफल रहे, क्योंकि उस समय गढ़वाल में कम्यूनिस्ट विचारधारा का घोर विरोध था। भवानी सिंह रावत, चन्द्रशेखर आजाद के इतने भक्त थे कि स्वतन्त्रता के पश्चात इन्होंने सरकार से दुगड्डा में उनका एक स्मारक बनाने का अनुरोध किया। इनके निरन्तर प्रयत्नों से सन् 1975 में नगरपालिका परिषद दुगड्डा द्वारा कोटद्वार-दुगड्डा-पौड़ी राजमार्ग पर चन्द्रशेखर आजाद की प्रतिमा, पालिका भवन के पास आजाद पार्क का निर्माण कराकर स्थापित की गयी। आजाद की स्मृति को चिरस्मरणीय बनाये रखने के लिए भवानी सिंह रावत ने उनके बलिदान दिवस 27 फरवरी पर सन् 1971 से एक समारोह के आयोजन की परम्परा डाली। जिसके वृहद रूप को देखते हुए उत्तर प्रदेश सरकार ने सन् 1987 को पर्यटन विभाग की ओर से इसे शहीद मेले का रूप देकर मान्यता प्रदान की।

अपने जीवन के अन्तिम वर्षों में मधु-मेह रोग से पीड़ित रहे और इसी रोग के कारण 6 जून, 1986 को इनका देहावसान हो गया।

सन्दर्भ

1. स्वतन्त्रता संग्राम के सैनिक:गढ़वाल डिवीजन, पृष्ठ संख्या 69 (सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, उ0प्र0 1971)
2. क्रान्तिकारी भवानी सिंह रावत के द्वारा लेखक को प्रेषित संस्मरणों के कुछ अंश (लेखक के निजी संग्रह में सुरक्षित)
3. मनराल, डॉ0 धर्मपाल सिंह, स्वतन्त्रता संग्राम में कुमांऊ-गढ़वाल का योगदान, पृष्ठ संख्या 187
4. नैथानी, ललिता प्रसाद (सम्पादक)-साप्ताहिक सत्यपथ (8 अप्रैल, 1972 कोटद्वार गढ़वाल)
5. पाण्डे, डॉ0 विष्णु, गढ़सुधा (उत्तराखण्ड की ऐतिहासिक भौगोलिक एवं साहित्यिक पत्रिका) पृष्ठ संख्या 87
6. चन्दोला, डॉ0 सुरेश (सम्पादक) स्मारिका-स्वाधीनता संग्राम में गढ़वाल, 1997-98 पृष्ठ संख्या 49
7. पोखरियाल, रमेश (सम्पादक) दैनिक सीमान्त वार्ता 16 अगस्त, 1987
8. नेगी, कुंवर सिंह कर्मठ (सम्पादक) कर्मभूमि विशेषांक, पृष्ठ संख्या 65 (26 जनवरी, 1956 कोटद्वार गढ़वाल)
9. पांथी, अनिल (सम्पादक)-साप्ताहिक मसूरी टाइम्स (15 अगस्त, 1989 मसूरी)
10. मनराल, डॉ0 धर्मपाल सिंह, पूर्वोक्त-पृष्ठ संख्या 189
11. क्रान्तिकारी भवानी सिंह के द्वारा लेखक को प्रेषित संस्मरणों के कुछ अंश (लेखक के निजी संग्रह में सुरक्षित)
12. नैथानी, ललिता प्रसाद (सम्पादक)-साप्ताहिक सत्यपथ (8 अप्रैल, 1972 कोटद्वार गढ़वाल)